हैं तो सारे भारत में ऐसे 37 करोड़ से भी ज्यादा असंगठित मजदूर हैं, लेकिन इनके लिए सोचने वाला कोई नहीं है।

हम लोग एम.पी. हैं, हमें भी पेंशन मिलती है। कोई डाक्टर है, कोई प्रोफेसर है, कोई टीचर भी है, इनको पी.एफ. का लाभ भी मिलता है और पैंशन भी मिलती है। लेकिन आम जनता जिसको वोट देती है, जिनकी वजह से चुनकर पार्लियामेंट में आते हैं, वह हमारा गरीब किसान, खेतीहर मजदूर, खेत में काम करने वाला आदमी है, उनको तो यह सब नहीं मिलता है। हमारे पश्चिम बंगाल में थोड़ी बहुत राहत हम लोग दे सके हैं, क्योंकि हमने किसी-किसी सलैक्टिड ट्रेड में पी.एफ. वहां चालू किया है।

हमारी सरकार से यह मांग है कि 37 करोड़ से ज्यादा जो खेतीहर मजदूर हैं, जो रिक्शापुलर हैं, ईंट भट्टे के श्रमिक हैं, जो निर्माणकर्मी हैं, इन सब लोगों के लिए एक कॉप्रीहेंसिव बिल बनायें, ताकि उन लोगों को थोड़ी बहुत राहत मिले, एजुकेशन मिले, हैल्थ की प्राब्लम दूर हो और जब ज्यादा उम्र हो जाये तो वह अपने बाल-बच्चे लेकर दाना-पानी उनके मुंह में दे सके।

मुझे जो कहना है, कह दिया, मैं समाप्त करता हूं।

श्री गिरधारी लाल भार्गव (जयपुर) : पहले तो मैं दूसरी सीट से बोल रहा हूं, क्योंकि मेरी सीट पर मेरे एक साथी ने कब्जा कर रखा है, इसलिए मुझे आप यहां से बोलने की अनुमति दें।

उपाध्यक्ष महोदय : आप बोल लें।

श्री गिरधारी लाल भार्गव : राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। देश के कुल क्षेत्रफल का 10.4 प्रतिशत भू-भाग राजस्थान में है, यही नहीं देश की कुल जनसंख्या का 5.5 प्रतिशत एवं कुल पशुधन का 18.70 प्रतिशत भी अकेले राजस्थान में है, जबकि देश में उपलब्ध सतही जल मात्रा का 1.16 प्रतिशत सतही राजस्थान में उपलब्ध है। बढ़ती जनसंख्या एवं चौमुखी विकास के साथ-साथ पेयजल, सिंचाई एवं उद्योगों हेतु जल की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है, जबकि राज्य में सतही एवं भूजल संसाधन सीमित हैं। कई क्षेत्रों में जल में फ्लौराइड खारापन की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक हो गई है। स्थिति यहां तक आ गई है कि प्रदेश के 237 ब्लाक में से मात्र 32 ब्लाक ही संरक्षित श्रेणी में रह रहे हैं। 1984 में जहां दोहन मात्रा 35 प्रतिशत प्राथमिक जल स्रोतों जैसे पुरानी बावड़ी, टांके, कुंए, नलकूप और जिन हैण्डपम्पों का जलस्तर नीचे चला गया है, उनको ठीक करने के लिए एनीकट, हैण्डपम्प, खड़ीनिर्माण का जीर्णोद्धार होना नितान्त आवश्यक हो गया है, बल्कि यही नहीं, शहरों में भी वर्षा का पानी एकत्रित करना और गांवों में खड्डे खोदकर वर्षा का पानी एकत्रित करना नितान्त आवश्यक हो गया है।

इसलिए मेरी केन्द्र सरकार से मांग है कि नदियों को जोड़ने के अतिरिक्त जल अभियान को सफल बनाने के लिए राशि उपलब्ध कराए, जिससे कि शहर व गांवों में जल अभियान कार्य सफल हो सकें। वर्षा के जल को शहरों में एकत्रित करके जल का उपयोग हो सके और गांवों में भी जल को खड्डों में एकत्रित किया जाए, जिससे कि जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया जा सके। मैं इन सब के

लिए राजस्थान की वर्तमान मुख्यमंत्री बहन वसुन्धरा जी को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने एक बहुत सुन्दर कार्यक्रम राजस्थान में चलाया है और राजस्थान में प्रदेश स्तर पर, जिला स्तर पर और गांव स्तर पर उन्होंने बहुत सुन्दर योजना बनाई है।

राजस्थान में लोगों को पीने का पानी किस प्रकार से मुहैया हो सकता है। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं है। कहा जा रहा है कि पानी की समस्या के चलते अगला विश्व युद्ध हो सकता है। राजस्थान के लोग पानी को लेकर सुखी हों, यह बहन वसुंधरा जी का प्रयास है। इसके लिए मैं आपके माध्यम से बहन वसुंधरा जी को धन्यवाद दे रहा हूं। धन्यवाद।

SHRI A.V. BELLARMIN (NAGERCOIL): Mr. Deputy-Speaker, Sir, India has large reserves of beach sand minerals such as Illmenite, Rutile, Zircon and other atomic minerals mainly as placer deposits. These reserves are mostly located in the coastal stretches of peninsular India, with the exception of a few inland placer deposits. The total reserves of Illmenite according to preliminary exploration amount to 348 million tonnes. Out of the total reserves, about 87 million tonnes are located in Tamil Nadu, especially in Kanyakumari, Tirunelveli and Tuticorin districts. The deposits at Kanyakumari are of superior grade in that the T1O2 content in Illmenite is as high as 55 to 56 per cent as against other places.

The total mineral reserves of Illmenite in Kanyakumari are about 15 million tonnes. A major portion of this deposit lies in and around Manavala Kurichi village which is about 25 km. away from Kanyakumari and about 75 km. from Trivandrum.

There is already a public sector undertaking, Indian Rare Earths Limited, working in Manavala Kurichi, which is engaged in mining and production of all the prescribed minerals including Illmenite, Monozite, Rutile, Zircon, etc. The Manavala Kurichi plant presently produces one lakh tonnes per annum of